RNI/MPHIN/2013/614

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

# ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

दशम वर्ष, तृतीय अंक

जुलाई–अगस्त 2021

भारतीय ज्योतिषम्






₹ 30

दो गज की दूरी - मास्क है जरूरी

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्

# ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

**प्रो. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्**

कार्यकारी सम्पादक

**अविनाश उपाध्याय**

सम्पादक

**डॉ. रोहित पचौरी**

**डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल**

ज्ञान सहयोग

**पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रस्ट चैन्ने**

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by
**Smt P V N B Srilakshmi**
on behalf of
**Bharatiya jyotisham**
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - **DR. ROHIT PACHORI**

ISSN 2278 - 0327

# विषय-सूची


| क्र. | लेख विषय | लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|---|
| 1. | महाकवि कालिदास के काव्यों में मनोविज्ञान के विविध आयाम | डॉ. अक्षय कुमार मिश्र | 05 |
| 2. | रोगविचार की प्रविधियाँ - ज्योतिषशास्त्र के सन्दर्भ में | डॉ. नीरज कुमार जोशी | 09 |
| 3. | ज्योतिषशास्त्र एवं रक्तचाप रोग | डॉ. प्रभाकर पुरोहित | 13 |
| 4. | शुक्लयजुर्वेदीय दयानन्द-भाष्य में शिल्पकला | डॉ. रंजन लता | 16 |
| 5. | वैदिक वाङ्मय में ज्योतिषशास्त्र | डॉ. सुमन कुमारी | 19 |
| 6. | वास्तुशास्त्र : एक परिचय | डॉ. विजय कुमार | 24 |
| 7. | महर्षि वाल्मीकि के श्रीराम | डॉ. जी.एल. पाटीदार<br>चन्द्रेश चौहान | 26 |
| 8. | प्रमुख उपनिषदों में वर्णित दार्शनिक सिद्धान्त : एक अनुशीलन | डॉ. राजकिशोर आर्य | 31 |
| 9. | महावाक्यार्थ विमर्श (बह्मसूत्रभाष्यों के आलोक में) | डॉ. घनश्याम मिश्र | 35 |
| 10. | आचार्य अभिनवगुप्त प्रणीत 'परमार्थसार' में सृष्टि-प्रक्रिया विमर्श | डॉ. प्रदीप | 40 |
| 11. | सांख्य दर्शन की प्राचीनता | डॉ. कृष्ण मुरारी मणि त्रिपाठी | 45 |
| 12. | सम्प्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया और अनुप्रयोग | डॉ. कुलदीप सिंह | 50 |
| 13. | सामाजिक नैतिकता के केन्द्रीय तत्व : अहिंसा, अनाग्रह और अपरिग्रह | डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़<br>प्रो. अनिल धर | 53 |
| 14. | भारत बोध की सम्यक् दृष्टि | डॉ. वरुण कुमार उपाध्याय | 56 |
| 15. | राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में शिक्षक शिक्षा का दिग्दर्शन | डॉ. योगेन्द्र बाबू<br>डॉ. हरीश पाण्डेय | 61 |
| 16. | भक्तिकालीन काव्य : आज के संदर्भ में | डॉ. हेमवती शर्मा | 67 |
| 17. | ओडिशा में वसन्तोत्सव | डॉ. सोमनाथ दाश | 70 |
| 18. | अपभ्रंश की उत्पत्ति और रस सिद्धान्त की संस्कृत परम्परा | डॉ. अनीता | 75 |
| 19. | आज के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण शिक्षा का महत्त्व | डॉ. हशीकेश दलाई | 78 |
| 20. | महाभारत में संगीत-विद्या के तत्त्वों की गवेषणा | डॉ. रश्मि यादव | 82 |
| 21. | शान्तामङ्गल नाटक में स्त्री पात्र | डॉ. मनोज कुमार | 86 |
| 22. | छायावाद और महादेवी वर्मा की कविताएँ | डॉ. आशा | 89 |
| 23. | पातञ्जल योगदर्शन में प्रतिपादित विभूतियों की उपादेयता | श्रीमती रेणु | 93 |
| 24. | जम्मू-कश्मीर विवाद एवं अंत | डॉ. अर्चना चौहान | 100 |
| 25. | पार्वती का जीवन : एक दर्शन | डॉ. प्रवीण बाला | 105 |

ISSN 2278 - 0327

# रोगविचार की प्रविधियाँ - ज्योतिषशास्त्र के सन्दर्भ में

**डॉ. नीरज कुमार जोशी**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

ज्योतिषशास्त्र सम्पूर्ण पृथ्वी पर ग्रह स्थिति द्वारा घटनाओं के सम्भावनाओं को प्रकाशित करता है। जिसमें मानव जीवन के सभी पक्षों पर विचार किया जाता है यथा- शिक्षा, कार्यक्षेत्र, सन्तान, आयु, स्वास्थ्य, रोग इत्यादि। मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य, रोग इत्यादि का विचार भैषज्य ज्योतिष के अन्तर्गत किया जाता है।

**भैषज्य ज्योतिष-** भैषज्य ज्योतिष "*ज्योतिर्वेदौ निरन्तरौ*" की अवधारणा का सार्थक रूप है। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से मानव शरीर में रोगों का ज्ञान करना, रोग उत्पन्न होने के समय का ज्ञान करना तथा रोगों के उत्पन्न होने के कारणों को ग्रह स्थिति के माध्यम से जानने के लिए ज्योतिष शास्त्र की जिस प्रविधि का प्रयोग किया जाता है, उसे भैषज्य ज्योतिष कहा जाता है।

**भैषज्य ज्योतिष में रोग ज्ञान के साधन-**1-आयुर्वेद 2 - ज्योतिष

**आयुर्वेद-** आयुर्वेद स्वास्थ्य के संरक्षण का विज्ञान है यह स्वस्थ मनुष्य को अस्वस्थ होने से बचाने एवं अस्वस्थ मनुष्य के रोग रोग को शमन करने का उपाय बताने वाला शास्त्र है। आयुर्वेद रोगी की चिकित्सा से पूर्व उसकी आयु विचार का परामर्श देता है एवं उसके रोग के साध्यता असाध्यता का विचार करता है।

**आयुर्वेद में रोगोत्पति के कारण-**

आयुर्वेद में कर्मप्रकोप एवं दोष प्रकोप दो प्रकार से रोगोत्पति का निरूपण किया गया है-

*कर्मजा व्याधय: केचिद् दोषजा: सन्ति चापरे।*[1]

1.कर्मजन्य 2. दोषजन्य

**1. कर्मजन्य रोग-** कर्म जनित रोगों से अभिप्राय है जब मनुष्य सद्वृत्ति सदाचार शुद्ध आहार विहार ऋतु का पालन करता है और रोग के उत्पन्न होने का मौसम भी न हो और फिर भी अचानक रोग हो जाय तो वह कर्मजन्य रोग मानना चाहिए।[2]

**2. दोषजन्य रोग-**मनुष्य के शरीर में वात, पित्त और कफ के कारण मिथ्या आहार विहार के कारण जो रोग उत्पन्न होते हैं उन्हें दोष जन्य रोग कहा जाता है तथा इन रोगों का सम्बन्ध क्रियमाण कर्म से होता है।

**ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोगोत्पत्ति के कारण-**

ज्योतिष शास्त्र में भी घटनाओं के होने का कारण कर्मों को ही माना गया है। इसका निरूपण आचार्य वराहमिहिर करते हैं-

*यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाऽशुभं तस्य कर्मण: पंक्तिम्।*
*व्यञ्जयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव।।*[3]

कर्म के तीन भेद हैं- 1. संचित 2. प्रारब्ध 3. क्रियमाण

आयुर्वेद में रोगों के उत्पन्न होने का कारण संचित कर्म में विकृति माना गया है। संचित कर्म के ही एक भाग जो हम भोगते हैं प्रारब्ध कहा जाता है। इस प्रकार संचित एवं प्रारब्ध कर्म के कारण कर्मजन्य रोग उत्पन्न होते हैं। शतातापीय तन्त्र में इस विषय में कहा गया-

*पूर्वजन्मकृतं पापं नरकस्य परिक्षये।*
*बाधते व्याधिरूपेण तस्यकृच्छ्रादिभि: शम:।।*

अर्थात् पूर्वजन्मों में अर्जित जो शुभाशुभ कर्म है उन कर्मों को ज्योतिष शास्त्र प्रकट (प्रकाशित) करता है जैसे अन्धकार में रखे हुए पदार्थों को दीपक प्रकट (प्रकाशित) करता है। इसी प्रकार रोगों की उत्पत्ति का कारण भी ज्योतिष शास्त्र पाप कर्मों को मानता है।

*जन्मान्तर कृतं पापं व्याधि रूपेण जायते।*[4]

**ज्योतिष शास्त्र और आयुर्वेद-**

रोग के निर्णय एवं उसके उपचार के विषय में ज्योतिष और आयुर्वेद एक दूसरे के पूरक शास्त्र हैं। इसीलिए कि ज्योतिष ग्रह, भाव, राशि के आधार पर गुण धर्मों का निरूपण करता है तथा आयुर्वेद मनुष्य की चर्या, त्रिदोष (वात-पित्त-कफ) आहार-विहार के आधार पर रोग के गुण धर्मों का निर्णय कर उपचार करता है। इसलिए श्रुति वाक्य के रूप में आचार्यों ने कहा है। "*ज्योतिर्वेद्यौ निरन्तरौ*" अर्थात् एक ज्योतिषी को वैद्य तथा एक

वैद्य को ज्योतिषी होना चाहिए। भैषज्य ज्योतिष इसी प्रकार कार्य करता है जिसमें आयुर्वेद चिकित्सा समय ज्योतिष का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।

**भैषज्य ज्योतिष में रोग विचार -**

भैषज्य ज्योतिष में ग्रहों, राशियों भावों के द्वारा रोग का निर्धारण किया जाता है। इस विषय में मंत्रेश्वर कहते हैं-

*रोगस्य चिन्तामपि रोगभावस्थितैर्ग्रहैर्वा व्ययमृत्युसंस्थैः।*
*रोगेश्वरेणापि तदन्वितैर्वाद्विस्यादिसम्बादवशाद्वदन्तु ॥*[1]

किसी भी जन्मकुण्डली में रोग के विषय में जानने के लिए -

1. षष्ठ भाव
2. अष्टम भाव
3. द्वादश भाव
4. षष्ठ में स्थित ग्रह
5. अष्टम भाव में स्थित ग्रह
6. द्वादश भाव में स्थित ग्रह
7. षष्ठ, अष्टम, द्वादश भावों के स्वामी

इन सभी का विचार करके यदि एक ही अशुभ ग्रह स्थिति निर्दिष्ट हो तो उस ग्रह जन्य रोग होता है।

**ग्रहों द्वारा भैषज्य में रोग विचार -**

भैषज्य ज्योतिष की अवधारणा जातक ग्रंथों में ग्रहों के शरीर में स्थित धातु आदि के कारकत्व से स्पष्ट होती है। शरीर में मज्जा का कारक मंगल है। स्नायु का कारक शनि है। वसा का कारक बृहस्पति है। अस्थि का कारक सूर्य है। वीर्य का कारक शुक्र है। रक्त का कारक चंद्र है। चर्म का कारक बुध है। जो ग्रह प्रभावित होता है उसकी धातु से जुड़ा हुआ है विकार शरीर में होता है।

*मज्जास्नायुवसास्थि शुक्ररुधिरत्वग्धातुनाथाः क्रमात्।*
*आयकीन्यादिनेशशुक्रशशभृत्सौम्याः कीर्तिताः॥*[2]

ज्योतिष शास्त्र में समस्त चर, अचर, धातु, मूल, जीव इत्यादि का कारकत्व ग्रहों के द्वारा निर्धारित है।[3]

**रोग विचार के प्रसंग में ग्रहों का परिचय[4]-**

**सूर्य ग्रह** -सूर्य मनुष्यों के (पुरुषों के दायें और स्त्रियों के बायें) नेत्र, आयु, अस्थि, सिर, हृदय, प्राण, शक्ति, मेदा, रक्त तथा पित्त को प्रभावित करता है। इसके बली होने पर हड्डियां मजबूत होती हैं तथा शरीर स्वस्थ बना रहता है। और इसके निर्बल, अशुभ या रोग कारक होने पर क्षय, पित्त प्रकोप, नेत्र रोग, अस्थि रोग, शिरोरोग, हृदय रोग, उच्चरक्तचाप, ज्वर, मूर्च्छा रक्तस्राव, चर्मरोग, मृगी एवं शूल होता है।

**चन्द्र ग्रह** -चन्द्र व्यक्ति के (पुरुष के बाम तथा स्त्री के दायें) नेत्र, स्तन, वक्ष, फेफड़ा, मन, मस्तिष्क, उदर, मूत्राशय, रस-धातु, शारीरिक पुष्टि एवं कफ को प्रभावित करता है। बली होने पर शरीर में रक्त संचार ठीक बना रहता है, वृद्धि होती है तथा मनोबल उन्नत रहता है। इसके निर्बल अशुभ रोग कारक होने पर कफ रोग, मूत्र विकार, जलोदर, मुख, नासिका रोग, पाण्डु, क्षय, मन्दाग्नि, अतिसार, स्त्रीजन्य रोग, प्रदर, अपस्मार, वात श्लेष्मा एवं मानसिक रोग होते हैं।

**मंगल ग्रह** -मंगल शरीर में कपाल, कान, धातु, मज्जा, पुट्ठों की पुष्टता, शारीरिक शक्ति, दाढ़, शौर्य, धैर्य को प्रभावित करता है। इसके बली होने पर व्यक्ति के हड्डियां मजबूत होती हैं, प्रतिरोध शक्ति बढ़ती है तथा धैर्य की वृद्धि होती है। यह निर्बल, अशुभ या रोग कारक हो रक्त विकार, रक्तचाप, फोड़ा-फुंसी, खाज, सूजन, चोट, कुष्ठ, ज्वर, वात पित्त विकार, महामारीजन्य रोग, गुल्म, मुष्कवृद्धि तथा वे रोग जिनमें शल्य क्रिया आवश्यक हो, होते हैं।

**बुध ग्रह** -बुध शरीर में जिह्वा, वाणी, स्वरयंत्र, श्वासनली, मस्तिष्क, फुफ्फुस, मज्जातन्तु, केश, मुख, हाथ एवं जिह्वा को प्रभावित करता है। इसके बलवान् होने पर बालक का मस्तिष्क पूर्ण विकसित होता है, उसका व्यक्तित्व आकर्षक तथा शैली मोहक होती है। इसके निर्बल या रोगकारक होने पर हिस्टीरिया, मानसिक रोग, चक्कर आना, न्यूमोनिया, विषम, त्रिदोषज्वर, टाइफाइड, पाण्डु संग्रहणी, शूल, मन्दाग्नि, गण्डमाला, वाणी विकार, उदर विकार, कण्ठरोग, नासिकारोग एवं वायु रोग होते हैं।

**बृहस्पति ग्रह**-गुरु शरीर में चर्बी, वीर्य, उदर, यकृत, रक्त धमनी, त्रिदोष तथा कफ को प्रभावित करता है। इसके बली होने पर शरीर पुष्ट होता है, विचार शक्ति अच्छी होती है तथा मन में शांति एवं मनोयोग बना रहता है। इसके निर्बल, अशुभ या रोगकारक होने पर उदर विकार, मज्जादोष, यकृतरोग, प्लीहा, स्थूलता, दन्तरोग, वायु विकार, मूर्च्छा, मस्तिष्क विकार, ज्वर, कर्ण रोग, ऊँचाई से गिरना एवं मानसिक तनाव उत्पन्न होता है।

**शुक्र ग्रह**- शुक्र शरीर में जननेंद्रिय, शुक्राणु, नेत्र, कपोल, चिबुक, स्वर, रस, गर्भाशय एवं संयोग शक्ति को प्रभावित करता है। इसके बली होने पर शरीर सुडौल होता है; मनुष्य की काम शक्ति बलवान् होती है तथा वीर्य पुष्ट होता है। इसके निर्बल, अशुभ या रोग कारक होने पर मूत्र विकार, वीर्य, विकार, गुप्त रोग, स्त्रीसंसर्गजन्य रोग, मादक द्रव्यों के सेवन से उत्पन्न होने वाले विकार, विषजन्य रोग, उपदंश, प्रमेह, मधुमेह, प्रदर, कफवायु विकार एवं पाण्डु रोग होता है।

**शनि ग्रह**- शनि शरीर में हड्डियों की जोड़, पैर, घुटने, वात संस्थान, मज्जा तथा वात को प्रभावित करता है। इसके बलवान् होने पर स्नायुमण्डल पुष्ट तथा शरीर सुदृढ होता है। इसके निर्बल, अशुभ या रोगकारक होने पर वायु विकार, स्नायु विकार, जोड़ों में दर्द, गठिया, सन्निपात, पक्षाघात, पागलपन, दाढ़ में दर्द, अपचन, खांसी, दमा, अंग-भंग तथा असन्तोष या निराशाजन्य मानसिक रोग होते हैं। यह अपराध वृत्ति से लेकर आत्महत्या तक करवाने में समर्थ माना गया है।

**राहु ग्रह** -राहु शरीर में मस्तिष्क, रक्त, त्वचा एवं वात को प्रभावित करता है। इसके बलवान् होने पर शरीर में स्फूर्ति, ताजगी एवं चैतन्य बनी रहती है तथा इसके निर्बल, अशुभ या रोग कारक होने पर चेचक, कृमि, मृगी, सर्पदंश, पशुओं से चोट, कुष्ठ एवं कैंसर जैसे असाध्य रोग हो जाते हैं।

**केतु ग्रह** -केतु शरीर में वात, रक्त तथा चर्म को विशेष रूप से प्रभावित करता है। इसके बलवान् होने पर शरीर में श्रम शक्ति, संघर्ष शक्ति, प्रतिरोध शक्ति एवं सक्रियता बनी रहती है। तथा इसके निर्बल होने पर शरीर में सुस्ती, अकर्मण्यता, शरीर में चोट, घाव, चर्म रोग, जटिल रोग एवं एलर्जी हो जाती है।

**रोग विचार में राशियाँ-**

ज्योतिषशास्त्र के जातक ग्रन्थों[5] में काल रूपी पुरुष की कल्पना कर उसके शरीर के विविध अंगों में मेष आदि द्वादश राशियों की स्थापना की गई है। जिसके आधार पर उसके अंग रोगग्रस्त या स्वस्थ है- यह माना जा सकता है। ज्योतिषशास्त्र के आचार्यों की इस मान्यता के अनुसार मेष राशि सिर का, वृष मुख का, मिथुन भुजाओं का, कर्क हृदय का, सिंह उदर का, कन्या कमर का, तुला बस्ति का, वृश्चिक गुप्तांग का, धनु ऊरू का, मकर जानु का, कुम्भ जंघाओं का, तथा मीन राशि पैरों का प्रतिनिधित्व करती है।

1. मेष राशि-मस्तिष्क, माथा (ललाट), शरीर एवं सिर के बाल।
2. वृष राशि- आँख, कान, नाक, गाल, होठ (ओष्ठ), दाँत, मुख, जिह्वा एवं गला।
3. मिथुन राशि- कण्ठ, ग्रीवा, कन्धा, भुजा, कोहनी, मणिबन्ध, हथेली, वृक्ष एवं स्तन।
4. कर्क राशि- फेफड़े, श्वासनली एवं हृदय।
5. सिंह राशि-पेट, आँत, जिगर, तिल्ली, गुर्दा एवं नाभि।
6. कन्या राशि-कमर एवं कूल्हा (नितम्ब)।
7. तुला राशि-बस्ति, मूत्राशय एवं गर्भाशय का ऊपरी भाग।
8. वृश्चिक राशि-गर्भाशय, जननेन्द्रिय एवं गुदा।
9. धनु राशि-ऊरू।
10. मकर राशि-जानु एवं घुटना।
11. कुम्भ राशि-जंघा, पिंडली।
12. मीन राशि-टखना, पैर, पदतल एवं पैर की उंगलियाँ।

**मेषादि राशियाँ एवं उनके रोग -**

मेष आदि द्वादश राशियाँ स्वभावतः जिन-जिन रोगों को उत्पन्न करती हैं[6] वे रोग इस प्रकार है:-

1. मेष राशि रोग- नेत्ररोग, मुखरोग, सिरदर्द, मानसिक तनाव, उन्माद एवं अनिद्रा।
2. वृष राशि रोग- गले एवं श्वासनली के रोग, घटसर्प तथा आँख, नाक एवं गले के रोग।
3. मिथुन राशि रोग- रक्तविकार, श्वास, फुफ्फुस रोग, एवं मज्जारोग।
4. कर्क राशि रोग- हृदयरोग एवं रक्तविकार।
5. सिंह राशि रोग- उदरविकार, मेदवृद्धि एवं वायुविकार।
6. कन्या राशि रोग- जिगर, तिल्ली, आमाशय के विकार, अपचन, मन्दाग्नि एवंकमर में दर्द।
7. तुला राशि रोग-मूत्राशय के रोग, मधुमेह, प्रदर, मूत्रकृच्छ एवं बहुमूत्र।
8. वृश्चिक राशि रोग-गुप्तरोग, अर्श, भगंदर, उपदंश, सूक एवं संसर्ग- जन्य रोग।
9. धनु राशि रोग- यकृत दोष, ऋतुविकार, अस्थिभंग, मज्जारोग एवं रक्त दोष।
10. मकर राशि रोग- वातरोग, शीतरोग, चर्मरोग एवं रक्तचाप।
11. कुम्भ राशि रोग- जलोदर, मानसिक रोग, ऐंठन एवं गर्मी।
12. मीनराशि रोग-असहिष्णुता (एलर्जी), चर्मरोग, रक्तविकार, आमवात, आंव,ग्रन्थि, गठिया।

**शारीरिक अंगों के प्रतिनिधि भाव-**

मनुष्य की कुण्डली भी राशि चक्र की भाँति उसके सम्पूर्ण शरीर की प्रतीक है। जिस प्रकार काल पुरुष के शरीर में मेष आदि द्वादश राशियों को स्थापित कर मेष आदि राशियों के प्रतिनिधत्व में आने वाले अंगों का विचार किया जाता है, ठीक उसी प्रकार कालपुरुष के शरीर में लग्न आदि 12 भावों को स्थापित कर प्रत्येक भाव से शरीर के विविध अंगों का विचार होता है।[7]

*शिरोऽक्षादिर्मुखं कण्ठं बोजनसा च गुह्यकम्।*

पायौ पार्श्वौ दृशौ पादौ प्रपदौ कुक्षिमादिशेत्।।[12]

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम भाव | - | मस्तिष्क, ललाट एवं सिर। |
| द्वितीय भाव | - | आँख, कान, नाक, गाल, होंठ, दाँत, मुख, जिह्वा एवं गला। |
| तृतीय भाव- | | कण्ठ, ग्रीवा, कन्धा, भुजा, कोहनी, हथेली, वक्षस्थल एवं स्तन। |
| चतुर्थ भाव | - | फेफड़े, श्वासनली एवं हृदय। |
| पंचम भाव | - | पेट, आँते, जिगर, तिल्ली, गुर्दा एवं नाभि। |
| षष्ठ भाव | - | कमर, कूल्हा, नितम्ब। |
| सप्तम भाव | - | बस्ति, मूत्राशय एवं गर्भाशय का ऊपरी भाग। |
| अष्टम भाव | - | गर्भाशय, जननेन्द्रिय, गुदा एवं अण्डकोष। |
| नवम भाव | - | ऊरू। |
| दशम भाव | - | जानु एवं घुटना। |
| एकादश भाव | - | जंघा एवं पिण्डली। |
| द्वादश भाव | - | टखना, पैर, तलवा (पादतल) एवं पैर की उँगलियाँ। |

**निष्कर्ष-**

इस प्रकार भैषज्य ज्योतिष में ग्रह, राशि, भावों के शुभाशुभ कारकत्व शारीरिक धातु, कालपुरूष के शरीर में राशियों के विभाजन, कालपुरूष के अंगों का भावों के आधार पर विभाजन द्वारा भैषज्य ज्योतिष में रोगों का विचार किया जाता है। प्रधान रूप से रोग विचार में जन्म कुण्डली का छठा घर जिसे रोग भाव या शत्रु भाव कहा जाता है यह रोग के प्रारम्भ का प्राथमिक द्योतक भाव होता है। तथा इसका स्वामी रोगेश कहलाता है। इनकी अशुभ स्थिति जिस राशि, भाव ग्रह से बनती है उसके कारकत्व स्थान के अनुसार रोग उत्पन्न होता है। तथा षष्ठ भाव से उत्पन्न होन वाला रोग अल्पकालिक एवं चिकित्सा उपचार द्वारा साध्य होता है। भैषज्य ज्योतिष में रोग विचार के लिए कुण्डली में दूसरा महत्वपूर्ण भाव अष्टम भाव होता है जिसे आयु भाव या मृत्यु भाव कहते हैं। इस भाव का सम्बन्ध जब षष्ठ भाव (रोग भाव), रोगेश से होता है तो यह भाव भी रोग को उत्पन्न करता है। इसके द्वारा उत्पन्न रोग दीर्घकालिक तथा कई परिस्थितियों में असाध्य होता है। इसके द्वारा जन्मजात रोग भी प्राप्त होते हैं।

भैषज्य ज्योतिष में रोग विचार के लिए कुण्डली में तीसरा महत्वपूर्ण भाव द्वादश भाव होता है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता है। इस भाव का सम्बन्ध जब षष्ठ भाव, षष्ठेश, अष्टम भाव, अष्टमेश से अशुभ स्थितियों में होता है तो यह भाव भी रोग उत्पन्न कारक हो जाता है। इसके सम्बन्ध से उत्पन्न रोग चिकित्सालयों में बहुत समय रहने तथा अत्यधिक व्यय करने के उपरान्त ठीक होता है।

इस प्रकार भैषज्य ज्योतिष के माध्यम से आयुर्वेद, ज्योतिष शास्त्र के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध से रोग का विचार कर उसका ज्ञान किया जाता है। तथा रोग उत्पन्न करने वाले ग्रह, भावेश, राशीश, कारक की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा, गोचर के अनुसार रोग के समय का निर्धारण किया जाता है। तथा कर्मजन्य, दोषजन्य, साध्य, असाध्य कारणों को जानकर तदनुसार चिकित्सा, मंत्र, मणि, औषधि, दान, स्नान आदि प्रविधियों द्वारा रोग का उपचार किया करना चाहिए।।

**सन्दर्भ सूची -**

1. चरक संहिता -निदान स्थान 5/29
2. सुश्रुत संहिता- 34
3. लघुजातक अ-1 श्लोक 3
4. प्रश्न मार्ग- अ. 13 श्लोक 29
5. फलदीपिका अ. 14, श्लोक 1
6. जातक पारिजात अ. 2 श्लोक 28
7. फलदीपिका - अ. 14, श्लोक-2-9
8. ज्योतिष शास्त्र में रोग विचार प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी पृ. सं. 6, 7
9. जातक परिजात अ. 1 श्लोक 8।
10. सदसद्ग्रहसंयोगात् पुष्टः सोपद्रवास्ते च। लघुजातक अध्याय 1 श्लोक 5
11. दैवज्ञाभरण: प्रकाश 3 श्लोक 70।
12. सर्वार्थ चिन्तामणि अ. 5 श्लोक 71